–: अनौपचारिक टिप्पणी :–

विषय : चिकित्सा जगत में मातृभाषा अथवा राष्ट्रभाषा का प्रयोग के संबंध में।
सन्दर्भ : डा0 पी0एस0 गौर (एम.एस.आर्थ.), 162, गोपालगंज, सागर, म.प्र. –470002 के पत्र दिनांक शून्य के सन्दर्भ में।

—— : : —— : : ——

उपरोक्त विषयान्तर्गत प्राप्त सन्दर्भित मय संलग्नक की छाया प्रतियां इस पत्र के साथ संलग्न कर लेख है कि उक्त पत्रों को विभाग की वैबसाइट पर डलवाने की व्यवस्था करावें।

संलग्न : उपरोक्तानुसार।

अति0 निदेशक (राजपत्रित)
चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवायें,
राजस्थान जयपुर।

प्रभारी,
कम्प्यूटर सर्वर रूम,
मुख्यालय।

अनौ0टि0 क्रमांक :– राजपत्रित/सामान्य–लूज/2011/861
दिनांक : 3/10/11

(A)

प्रेषक :
डॉ.पी.एस.गौर
(एम.एस.आर्थ.)
162, गोपालगंज
सागर म.प्र.पिन 470002
मोबा.नं. 09425188638

माननीय मुख्यमंत्री जी
राजस्थान,

सादर प्रणाम,

जीवन के साथ ही मन का साक्षात्कार दैहिक, दैविक व भौतिक ताप से होता हैं। दैहिक ताप के साक्षी चिकित्सा जगत से सम्बद्ध अनेक घटक होते है। इन घटकों का यदि सामान्य जन से असम्प्रेषण हो तो परिणाम भयावह सामने आते हैं। सम्प्रेषणीयता का सर्वमान्य साधन मातृभाषा हैं, मैं एक अस्थिरोग विशेषज्ञ होने के कारण भाषा के कारण जन्म लेने वाली समस्याओं का जीवन्त साक्षी हूँ, इसीलिए मैने गहराई से अनुभव किया हैं, कि यदि चिकित्सा जगत् में मातृभाषा अथवा राष्ट्रभाषा का प्रयोग किया जाये तो इस देश की लाखों करोड़ों अशिक्षित, अल्पशिक्षित, अर्द्धशिक्षित रोग ग्रस्त जनता के रोग निदान में सहज ही सफलता मिल सकती हैं आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा हैं कि मेरे द्वारा किया गया शोध प्रबंध **"चिकित्सा सेवा में हिन्दी भाषा के प्रयोग"** पर डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर म.प्र. से पी.एच.डी. की उपाधि मिल चुकी हैं। शोध कार्य शुरू करते समय आपके पत्र कमांक अ.शा.पत्र सं.मुमं/जसप्र/2001 जयपुर दिनांक 04 अक्टूबर 2001 में दिये गये आशीष वचनों से मुझे नई ऊर्जा मिली व मेरा शोध कार्य पूरा हुआ। डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय सागर म.प्र. से मुझे इस शोध के प्रकाशन हेतु अनुमति मिली हैं। जिसके लिये मुझे आपके स्नेह से भरे दो शब्दों की अपेक्षा हैं। आशा हैं, कि मुझे आप अनुग्रहित करने की कृपा करें।

संलग्न :– आपका पत्र

धन्यवाद!

आपका उत्तरापेक्षी

डॉ.पी.एस.गौर

मुख्य मंत्री
राजस्थान

अ.शा.पत्र सं.मुमं/जसप्र/2001/
जयपुर, दिनांक 4 OCT 2001

प्रिय डा0 गौर जी,

आपका पत्र प्राप्त हुआ।

इससे मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि आप चिकित्सा जगत में मातृभाषा अथवा राष्ट्रभाषा का प्रयोग करने के पक्षधर हैं और चिकित्सा क्षेत्र में हिन्दी भाषा के प्रयोग पर शोध कार्य कर रहे हैं।

चिकित्सा ही नहीं विज्ञान एवं तकनीकी के अन्य विषयों में भी हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इससे अधिकाधिक लोगों को फायदा होगा। अपनी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने की आज सर्वाधिक आवश्यकता है।

मैं आपके प्रयासों में सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

सद्भावी,

(अशोक गहलोत)

डा0 पी.एस. गौर,
162, गोपाल गंज,
सागर–470002
(मध्य प्रदेश)